काशीहिन्दूविश्वविद्यालयीयसंस्कृतसाहित्यानुसन्धानसमितेः

पञ्चमं पुष्पम्

श्रीमद्भरतमुनिप्रणीतम्

नाट्यशास्त्रम्

द्वितीयभागात्मकम्

श्रीमदाचार्याभिनवगुप्तोपज्ञाभिनवभारतीविवृत्त्या प्राचीनप्राच्यशाखाप्रमुखेन
श्रीमदाचार्यमधुसूदनशास्त्रिणा विरचिताभिः प्रौढभूमिका-
मधुसूदनीबालक्रीडाभिः समुद्भासितम्

चौखम्भा विद्याभवन
चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)
वाराणसी-२२१००१

सम्पादकः
साहित्याचार्य श्री मधुसूदनशास्त्री एम० ए०
एक्स डीन, फैकल्टी आफ दी ओरियण्टल लर्निंग, का० हि० वि० वि० वाराणसी।

ओकारत्वं गच्छेदौकारश्चौषधादिषु नियुक्तः ।
प्रचलाचिराचलादिषु भवति चकारोऽपि तु यकारः ॥
अपरस्परनिष्पन्ना ह्येवं प्राकृतसमाश्रया वर्णाः ।
संयुक्तानां तु पुनर्वक्ष्ये परिवृत्तिसंयोगम् ॥१८॥
श्चप्सत्सथ्याः छ इति तथाभ्यह्यध्या
भवन्ति तु झकाराः ।
ष्टः ट्ठः, स्तः स्थः, ष्मो म्ह,
क्ष्णो ह्णः, ष्णो ण्हः, क्षः खकाररूपोऽपि ॥१९॥
आश्चर्यं अच्छरियं निश्चयमिच्छन्ति णिच्छयं च यथा ।
वत्सं वच्छं च यथा अप्सरसं तद्वदच्छरअं ॥

अभिनवभारती

अपरस्परनिष्पन्ना इत्यन्योन्यमश्लिष्टा असंयोगरूपा इत्यर्थः । यत्र संयुक्तास्तेषामिति षष्ठीबहुवचनम् ॥ १८ ॥ क्रमेण स्वयमुदाहरति वच्छं च इत्यादि ॥ २० ॥

बालक्रीड़ा

(मूल) औषध आदि में प्रयुक्त औकार ओत्व को प्राप्त होता है । प्रचल अचिर एवं अचल आदि शब्दों में चकार को यकार होता है ॥१७॥

(मूल) जो शब्द परस्पर में मिलकर निष्पन्न नहीं होते है अर्थात् असंयुक्त है उन प्राकृत समाश्रित वर्णों के विषय में यह उपर्युक्त निर्देश किया है । अब संयुक्त वर्णों के विषय में संयोग जनित परिवर्त्तन को कहूँगा ॥१८॥

(मूल) श्च प्स थ्य और त्स को छ होता है । निश्चय णिच्छओ । पश्चिमः पच्छिमो । लिप्सा लिच्छा । जुगुप्सा जुउच्छा । वत्स वच्छो उत्साह—उत्साहो । रथ्या रच्छा मिथ्या मिच्छा । पथ्या पच्छो । नेपथ्य ठोपच्छो । भ्य ह्य एवं ध्य को झ होता है । स्त को ष्ट त्थ को ट्ठ, ष्म को म्ह, क्ष्म को ह्ण, ष्ण को ण्ह, क्ष को ख होता है ॥१९॥

(मूल) आश्चर्य को अच्छरियं, निश्चय को निच्छय, वत्स को वच्छ, अप्सरस को अच्छरअ, उत्साह को उच्छाह, पथ्य का पच्छ तुभ्यं को तुज्झं, मह्यं मज्झं, एवं विन्ध्य को विंझ समझें ॥२०॥२१॥

अपरस्परनिष्पन्ना । एक दूसरे से संश्लिष्ट नहीं होनेवाले अर्थात् असंयोगरूप वर्ण । जहाँ वर्णसंयुक्त हैं उन वर्णों के विषय में कहेंगे । यहाँ संयुक्तानां षष्ठी का बहुवचन है ॥१८॥

अब क्रमशः संयुक्त वर्णों का उदाहरण देते हैं वच्छो इत्यादि । इसमें वत्स के त्सको छ हो गया है ॥१८॥

विपरीतम् । ब्रह्मा इसमें वम्हा की तरह म पहले और ह बाद में हो गया है । और ब्रह्म के व्रका रेफ लुप्त हो गया है ॥२०॥